P: ISSN NO.: 2394-0344
E: ISSN NO.: 2455-0817
Remarking
Vol-III * Issue- I* June- 2016

हायर सेकेण्डरी विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन

प्रदीप कुमार गुप्ता
सहायक प्राध्यापक,
शिक्षा शास्त्र विभाग,
स्व0 सरदार सिंह स्मृति शिक्षा महाविद्यालय, टीकमगढ,
(म.प्र.)

सारांश

पस्तुत शोध कार्य का मुख्य उद्देश्य हायर सेकेण्डरी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना था। इस शोध कार्य हेतु मध्य प्रदेश के टीकमगढ़ जिला की शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के कक्षा 12 वीं में अध्ययन करने वाले 70 विद्यार्थियों में से 44 किशोरों एवं 26 किशोरियों का चयन वादृच्छिक न्यादर्श विधि द्वारा किया गया। उपरोक्त उद्देश्य की प्राप्ति हेतु समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि को सम्मिलित किया गया। प्राप्त परिणाम में विद्यार्थियों के समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि के बीच परिमित धनात्मक सम्बन्ध है। इसके अलावा इस शोध कार्य में यह तथ्य भी सामने आया है कि किशोर एवं किशोरियों के बीच समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर है अर्थात किशोर की अपेक्षा किशोरियों में समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान कम है। यह अन्तर स्पष्ट करता है कि परिवर्तित परिवेश में किशोर किशोरियों की अपेक्षा जल्दी एवं बेहतर समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त कर लेते हैं।

मुख्य शब्द : किशोर, किशोरी, समायोजन, शैक्षिक उपलब्धि।

प्रस्तावना

प्रायः ऐसा देखा जाता है कि जिन किशोरों को पारिवारिक संघर्ष का सामना करना पड़ता है, उनका समायोजन स्कूल अधिकारियों, साथियों एवं पास–पड़ोस के लोगों से भी तनावपूर्ण होता है। कभी–कभी पारिवारिक संघर्ष के कारण उनमें अवसाद् सामाजिक अलगाव, स्कूल में लगातार असफलता जैसी जटिल समस्याएं आत्महत्या जैसी प्रवृत्ति को जन्म देती है। इस विषय परिस्थिति म समायोजन ही सफलता का मार्ग प्रशस्त करता है।

किशोरावस्था सांवेगिक अस्थिरता की वह अवस्था है, जिसमें किशोर अनेक परिवर्तनों के जंजाल में स्वयं को घिरा हुआ पाता है तथा मानसिक रूप से स्वयं को समस्त परिवर्तनों एवं समस्याओं का निराकरण करने में सक्षम मानते हुए एक जिम्मेदार व्यक्ति की भूमिका का निर्वाह करने लगता है। इस संवेगात्मक अस्थिरता की अवस्था में किशोर अत्यन्त उमंगित कल्पनाओं में डूबा हुआ, नायक पूजा में लीन रहता है। हरलॉक (1979) के अनुसार इस अवस्था का प्रसार 11–13 वर्ष से लकर 21 वर्ष तक माना जाता है। किशोरावस्था में किशोर में शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, सांवेगिक तथा सामाजिक विकास स्पष्ट रूप में दष्टिगोचर होते है। इस प्रकार किशोरावस्था शारीरिक परिपक्वता के साथ–साथ मानसिक, सांवेगिक परिपक्वता की भी अवस्था है। इस अवस्था में किशोर का शरीर बालकों से भिन्न प्रौढ़ों के समान हो जाता है। इस संक्रमणकालीन अवधि में किशोर स्वयं को दो अवस्थाओं के मध्य (वयःसंधि) पाता है, अतः वह परिवर्तनशील परिस्थितियों के बीच अपनी भूमिकाओं के निर्वाह में अस्त–व्यस्त या किंकर्तव्यविमूढ़ सा हो जाता है। इस अवधि में उस पर अपेक्षाकृत अधिक जिम्मेदारियों का बोझ आ जाता है, जबकि बाल्यावस्था में उसने स्वतंत्र का सर्वाधिक उपयोग किया होता है।

किशोर से बचकाने व्यवहार पर उसे व्यंग्य या कटाक्ष पड़ते है तथा आयु के अनुरूप आचरण करने की स्थिति में सुधार करने की हिदायत दी जाती है, जिससे वह संभ्रामित हो जाता है। इस अवस्था में किशोर अपनी स्थिति तथा भूमिका के विषय में अनेक प्रकार की समस्याओं के प्रति समायोजन स्थापित करने का प्रयास करता है इन समस्याओं का सीधा प्रभाव किशोरों तथा किशोरियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है। किशोरावस्था की समस्याओं में मुख्यतः स्कूल में समायोजन की समस्या, यौन व्यहार सम्बन्धी समस्या, नैतिक व्यवहार सम्बन्धी समस्या व्यावसायिक समयोजन सम्बन्धी समस्या, वित्तीय समस्या, मादक वस्तुओं के सेवन की समस्या, आत्महत्या आदि की समस्याएँ सम्मिलित

हैं।

प्रायः किशोरों को स्कूल में शिक्षकों एवं साथियों के साथ उचित समायोजन की समस्या का सामना करना पड़ता है। कतिपय अध्यापक अपनी रूढ़िवादी प्रकृति के फलस्वरूप किशोरों को किसी भी प्रकार को स्वतंत्रता देने से इंकार कर देते है और बालक समझकर उनको कभी–कभी शारीरिक दण्ड भी दे बैठते हैं। स्कूल का पाठ्यक्रम मूलतः सैद्धांतिक होता है और मुश्किल से छात्रों की उनमें सहभागिता हो पाती है। कक्ष में चुपचाप उन पाठ्यक्रमों पर भाषण सुनना उनमें उबन उत्पन्न करता है जो उनकी समस्याओं को और भी बढ़ा देता है।

सिंह (2009) के अनुसार किशोर किसी भी सामाजिक कार्यक्रम में स्वतंत्र होकर भाग लेना चाहते हैं जिसकी अनुमति माता–पिता से प्रायः नहीं मिलती। इसका परिणाम यह होता है कि उनमें तथा माता–पिता में तनाव बढता रहता है और पारिवारिक संघर्ष तीव्र हो जाती है। पारिवारिक संघर्ष के कारण किशोरों को अपने विकासात्मक कार्यो को पूरा करने में माता–पिता से उचित दिशा–निदश नहीं मिल पाता। इससे उनकी समस्याएं और भी जटिल हो जाती हैं। ऐसा देखा जाता है कि जिन किषोरों को पारिवारिक संघर्ष का सामना करना पड़ता है, उनका समायोजन स्कूल अधिकारियों, साथियों एवं पास–पड़ोस के लोगों से भी तनावपूर्ण होता है। कभी–कभी पारिवारिक सघर्ष के कारण उनमें अवसादे, सामाजिक अलगांव स्कूल में लगातार असफलता जैसी जटिल समस्याएं आत्महत्या जैसी प्रवृत्ति को जन्म देती है। इस विषय परिस्थिति म समायोजन ही सफलता का मार्ग प्रशस्त करता है।

समायोजन अभिप्राय एवं प्रयोजन

समायोजन का तात्पर्य सुव्यवस्थित अथवा अच्छी तरह से परिस्थितियों को अनुकूल बनाने को प्रक्रिया है जिसमें तात्कालिक आवश्यकताएं पूरी हो जाएँ तथा मानसिक तनाव और द्वन्द्व न्यूनतम हो सामान्य रूप में समायोजन शब्द के दो अर्थ है– यह निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति स्वयं पर्यावरण के बीच अधिक सामंजस्यपूर्ण सम्बन्ध बनाये रखने के लिए अपने व्यवहार में परितर्वन का देता है दूसरे अर्थ में समायोजन एक संतुलित प्रक्रिया है जिस पर पहुंचने पर हम उस व्यक्ति को सुसमायोजित कहते है। अतः समायोजन का अर्थ व्यक्ति की आन्तरिक एवं बाह्य मांगों एवं अभावों के मध्य सामंजस्य या संतोषजनक सम्बन्ध स्थापित करना है। किशोरों के जीवन में अनेक प्रकार की अनुकूल एवं प्रतिकूल परिस्थितियाँ आती हैं। उन परिस्थितियों के अनुरूप अनकूलित व्यवहार अपेक्षित है जो किशोरावस्था में यथोचित समायोजन एवं मार्गदर्शन द्वारा संभव है। किशोरावस्था में समायोजन स्तर का सोधा प्रभाव उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है।

शैक्षिक उपलब्धि

शैक्षिक उपलब्धि से अभिप्राय छात्रों द्वारा अर्जित ज्ञान, बोध, कौशल, अनुप्रयोग आदि योग्यताओं की मात्रात्मक अभिव्यक्ति से है। शिक्षण–अभिगम प्रक्रिया के द्वारा छात्रगण अपनी बौद्धिक योग्यताओं का विकास करते हैं। छात्रों ने किस सीमा तक अपनी बौद्धिक योग्यताओं का विकास किया है, यही उनकी उपलब्धि का सूचक होता है। शैक्षिक उपलब्धि का मापन विभिन्न प्रकार के परीक्षणों द्वारा किया जाता है (गुप्ता 2007)। गरट (1981) के अनुसार उपलब्धि परीक्षण द्वारा किसी निश्चित कार्य क्षेत्र में छात्रों द्वारा अर्जित किए गए ज्ञान एवं कौशल को मापा जाता है। उपलब्धि परीक्षण द्वारा ज्ञान या कौशल के किसी विशेष क्षेत्र में व्यक्ति के अन्तर्गत निपुणता की वर्तमान स्थिति का माप होता है।

समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि का सापेक्ष महत्व

जैन (1991) ने अध्ययनोपरांत निष्कर्ष प्राप्त किया कि किशोरों की संज्ञानात्मक क्षमता एवं उपलब्धियों पर किशोरों एवं माता–पिता के सम्बन्धों का प्रभाव पड़ता है। प्रजातांत्रिक वातावरण वाले परिवार के बच्चे अन्य बच्चों की अपेक्षा अधिक क्रियाशील, निर्माणशील, मित्रवत्, मौलिक तथा बौद्धिक जिज्ञासायुक्त होते हैं जिसका सीधा सम्बन्ध समायोजन व शैक्षिक उपलब्धि से है। कपूर (1987) ने अपने अध्ययन में पाया कि उच्च उपलब्धि वाले छात्रों का गृह, स्वास्थ्य, सांवेगिक एवं विद्यालयी समायोजन उच्च होता है। हाईस्कूल के छात्रों पर किए गए अध्ययन में मेहरोत्रा (1986) ने पाया कि चिन्ता/तनाव किशोर तथा किशोरियों की शैक्षिक उपलब्धि को समान रूप से प्रभावित करते हैं। शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध है। किशोरों की अपेक्षा किशोरियों में चिन्तास्तर उच्च पाया गया। जहीर (1988) के अनुसार परिवार में माता से किशोरों के सम्बन्ध का प्रभाव किशोरों के व्यक्तित्व, शैक्षिक उपलब्धि एवं आत्मविश्वास पर पड़ता है। माता से अलगाव मानसिक तनाव के साथ–साथ शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करता है। शर्मा (2002) ने विद्यार्थियों को शैक्षिक उपलब्धि पर माता–पिता की आकांक्षा एवं सम्बद्धता के प्रभाव का अध्ययन किया और पाया कि उच्च शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों के माता–पिता घर पर योजनाबद्ध तरीके से मार्गदर्शन करते हैं।

स्थान परिवर्तन का समयोजन पर प्रभाव स्पष्ट रूप में परिलक्षित होता है क्योंकि नये वातावरण व आन्तरिक वातावरण में समायोजन स्थापित करना आवश्यक हो जाता है। पारिवारिक समयोजन, स्कूल समायोजन, व्यक्तिगत समायोजन, साथियों के साथ समायोजन का प्रभाव छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है। प्रस्तुत अध्ययन इस दिशा में एक सार्थक पहल है।

अध्ययन का उद्देश्य

1. कक्षा 12 के विद्यार्थियों के समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि में सम्बन्ध का अध्ययन।
2. कक्षा 12 के किशोरों के समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि में सम्बन्ध का अध्ययन।
3. कक्षा 12 के किशोरियों के समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि में सम्बन्ध का अध्ययन।

न्यादर्श

मध्य प्रदेश के टीकमगढ़ जिले की शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय क कक्षा 12 वीं में अध्ययनरत 44 किशोरों तथा 26 किशोरियों का चयन वादृच्छिक न्यादर्श विधि द्वारा अध्ययनार्थ किया गया।

उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन हेतु निम्नलिखित उपकरणों का प्रयोग किया गया।

P: ISSN NO.: 2394-0344
E: ISSN NO.: 2455-0817
Remarking
Vol-III * Issue- I* June- 2016

मानकीकृत समायोजन मापनी

इस मापनी में गृह समायोजन सम्बन्धी 10 पद, विद्यालय समायोजन सम्बन्धी 10 पद तथा व्यक्तिगत समायोजन सम्बन्धी 10 पद सहित कुल 30 पद सम्मिलित हैं जिसके माध्यम से किशोरों तथा किशारियों अर्थात् विद्यार्थियों के रुझान एकत्र किए गए।

शैक्षिक उपलब्धि

माध्यमिक शिक्षा मण्डल बोर्ड भोपाल,(म.प्र.) के कक्षा 12 के छात्रों के परीक्षाफल 2014 को शैक्षिक उपलब्धि के रूप में प्रयोग किये गये हैं।

प्रदत्त विश्लेषण एवं व्याख्या

समायोजन मापनी में प्राप्त अंक एवं माध्यमिक शिक्षा मण्डल बोर्ड भोपाल, (म.प्र.) के द्वारा प्राप्त कक्षा 12 के परीक्षाफल (2014) को विश्लेषण करने हेतु मध्यमान, मानक विचलन तथा समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सम्बन्ध गुणनफल आघूर्ण सहसम्बन्ध गुणांक द्वारा ज्ञात किया गया एवं किशोरों तथा किशोरियों अर्थात् विद्यार्थियों के समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि की तुलना में सार्थकता की जाँच टी–टेस्ट द्वारा की गई।

परिणाम

सारणी – 01

कक्षा 12वीं के विद्यार्थियों की समायोजन शैक्षिक उपलब्धि में सहसम्बन्ध

कक्षा 12 के कुल विद्यार्थी (N)	समायोजन		शैक्षिक उपलब्धि		सहसम्बन्ध
	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन	
70	67.25	6.66	70.20	14.16	0.525

सारणी 01 से स्पष्ट है कि कक्षा 12 के छात्रों एवं छात्राओं का समायोजन मध्यमान 67.25, (मानक विचलन 6.6 सहित) शैक्षिक उपलब्धि कर मध्यमान 70.20 (मानक विचलन 14.16 सहित) समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि में सहसम्बन्ध 0.525 पाया गया अर्थात् कक्षा 12 के विद्यार्थियों के समायाजन एवं शैक्षिक उपलब्धि के बीच परिमित धनात्मक सहसम्बंध है जो इस तथ्य को स्पष्ट करता है कि समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि में परस्पर सहयोगी सम्बन्ध है अर्थात् जो छात्र अच्छी तरह समायोजित होगा, उसकी शैक्षिक उपलब्धि भी अच्छी होगी इससे स्पष्ट होता है कि छात्रों में सामाजिक एवं आर्थिक भिन्नता के बावजूद शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, टीकमगढ़ के सभी विद्यार्थियों को एक समान शैक्षिक वातावरण उपलब्ध कराता है जो विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में समान रूप से प्रभावित करता है।

सारणी –02

कक्षा 12 के विद्यार्थियों के समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि में सम्बन्ध का अध्ययन

कक्षा 12 के कुल किशोर (N)	समायोजन		शैक्षिक उपलब्धि		सहसम्बन्ध
	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन	
44	67.55	6.95	70.80	14.90	0.465

सारणी 02 से स्पष्ट है, कि कक्षा 12 के किशोरों का समायोजन मध्यमान 67.55, (मानक विचलन 695 सहित) शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान 70.80 (मानक विचलन 14.90 सहित) समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि में सहसम्बन्ध गुणांक का मान 0.465 पाया गया जो सम्पूर्ण कक्षा में सहसम्बन्ध गुणांक 0.525 से कम है। साथ ही यह परिणाम इंगित करता है कि किशोरों के समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि के बीच परिमित धनात्मक सहसम्बन्ध है।

सारणी – 03

किशोरियों के समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्ध का अध्ययन

कक्षा 12 के कुल किशोरियों (N)	समायोजन		शैक्षिक उपलब्धि		सहसम्बन्ध
	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन	
26	67.40	6.10	66.60	16.27	0.465

सारणी 03 से स्पष्ट है कि कक्षा 12 की किशोरियों का समायोजन मध्यमान 67.40 (मानक विचलन 6.10 सहित,) शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान 66.60 (मानक विचलन 16.27 सहित,) समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि में सहसम्बन्ध गुणांक का मान 0.465 पाया गया जो सम्पूण कक्षा के सहसम्बन्ध 0.525 से कम है। साथ ही यह स्पष्ट करता है कि विद्यार्थियों के समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि के बीच परिमित धनात्मक सहसम्बन्ध है।

उपर्युक्त परिणामों से स्पष्ट है कि किशोरों की समायोजन मध्यमान 67.55 (मानक विचलन 6.95 सहित), तथा किशोरियों का समायोजन मध्यमान 67.40 (मानक विचलन 6.10 सहित) किशोरों के समायोजन व कक्षा के समायोजन मध्यमान 70.80 (मानक विचलन 14.90 सहित), किशोरियों का शैक्षिक उपलब्धि व कक्षा के शैक्षिक मध्यमान से कम है। दोनों संवर्गों के समायोजन सूचकांकों का t 0.05 = 2.94 (p > 2.00, df=68) जिसका अर्थ है, किशोरों एवं किशोरियों के समायोजन के बीच सार्थक अन्तर है।

श्री विद्या प्रतिमा (2006) ने अपने अध्ययन में पाया कि विद्यार्थियों में तनाव का 40 प्रतिशत कारण उनके विद्यालय हैं तथा किशोर एवं किशोरियों के समायोजन में विद्यालय की महतो भूमिका है। भारतीय समाज में बालिकाएं कुछ संकोची हैं; अतः वे विद्यालय में अपने गुरुजनों, सहपाठियों से तुरन्त घुल–मिल नहीं पाती।

निष्कर्ष

उपर्युक्त परिणामों के आधार पर निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त होते हैं –

1. कक्षा 12 के विद्यार्थियों के समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि के बीच परिमित धनात्मक सहसम्बन्ध है। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि यदि समायोजन उच्च होगा तो छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि भी उच्च होगी।
2. कक्षा 12 के किशोरों के समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि के बीच परिमित धनात्मक सहसम्बन्ध है अर्थात् यदि समायाजन उच्च होगा तो छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि भी उच्च होगी।
3. कक्षा 12 की किशोरियों के समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि के बीच परिमित धनात्मक सहसम्बन्ध है अर्थात् यदि समायोजन उच्च होगा तो छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि भी उच्च होगी।

4. किशोरों का समायोजन मध्यमान किशोरियों के समायोजन मध्यमान से अधिक हैं। किशोरों की शैक्षिक उपलब्धि किशोरियों की शैक्षिक उपलब्धि से अधिक है। किशोर एवं किशोरियों के समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक अन्तर है जो स्पष्ट करता है कि परिवर्तित परिवेश में किशोर किशोरियों की अपेक्षा जल्द व बेहतर समयोजन प्राप्त कर लेते हैं। इसी प्रकार का परिणाम कुकरेती तथा उनियाल (2005) ने अपने अध्ययन में भी प्राप्त किये।

सुझाव

प्रस्तुत अध्ययन से प्राप्त परिणामों के आधार परसमायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि में सम्बन्ध के अध्ययन के उपरान्त निम्नलिखित सुझाव हैं

1. समयोजन स्तर को चिन्हित कर किशोरों एवं किशोरियों के लिए आवश्यक वातावरण सृजन तथा आवश्यकतानुसार मार्गदर्शन, निदानात्मक /उपचारात्मक शिक्षक द्वारा निम्न शैक्षिक उपलब्धि को उच्च शैक्षिक उपलब्धि स्तर तक परिणत किया जा सकता है।
2. अध्यापकों द्वारा किशोरों तथा किशोरियों के साथ समान व्यवहार अपेक्षित है। दोनों को समान अवसर उपलब्ध कराकर संकोची प्रवृत्ति को न्यून किया जा सकता है।
3. किशोरों तथा किशोरियों का पाठ्यसहगामी क्रियाकलापों में समान एवं समुचित भागीदारी को सुनिश्चित कराकर आत्मविश्वास की वृद्धि हेतु आवासीय परिवेश प्रोत्साहित किया जाए।
4. वे छात्र, जो अनुत्तीर्ण हो गए हैं अथवा निम्न शैक्षिक उपलब्धि के कारण अवसादग्रस्त हैं, उनके मार्गदर्शन के लिए परामर्शदाता की व्यवस्था विद्यालयों में की जाए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. कपूर, रीता, (1987) स्टडी ऑफ फैक्टर रिस्पान्सेबल फॉर हाई एण्ड लो एचीवमेंट ऐठ जुनियर हाई स्कूल बुच, एम. बी. फोर्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकशन एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली।
2. गैरेट, एच,ई, (1981) मनोविज्ञान एवं शिक्षा में सांख्यिकी, दशम संस्करण, बी.एफ. एण्ड सन्स बॉम्बे।
3. गुप्ता, एस,पी, एवं गुप्ता अलका (2007) आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन शारदा पुस्तक भवन, पी एण्ड टी, इलाहाबाद
4. जहीर सैदा, (1988) स्टडी ऑफ रिलशनशिप बिट्वीन मैटरनल बिहेवियर एण्ड पर्सनालिटी ऐज वेल ऐज स्कलौस्टिक एचीवमेंट ऑफ एडोलोसेन्टस, बुच, एम,वी, फोर्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन (1) 1991 एन,सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली।
5. जैन, शिखा, (1991) चाइल्ड रियरिंग प्रेक्टिसेस एण्ड एडोलोसेन्स काग्निटिव एचीवमेन्ट बुच, एम.वी., फिफ्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन (1) 1997 एन.सी.ई. आर.टी., नयी दिल्ली।
6. मेहरोत्रा, एस, (1986) ए स्टडी ऑफ द रिलेशनशिप बिट्वीन इन्टेलीजेन्स सोसियो इकोनामिक स्टेटस, एंक्जाईटी पर्सनालटी एड्जस्टमेन्ट एण्ड ऐकेडमिक एचीवमेंट ऑफ हाईस्कूल स्ट्डेन्ट्स बुच एम.वी., फोर्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन (1) 1991 एन.सी.ई. आर.टी., नयी दिल्ली।
7. शर्मा, एन.ए. (2002) ए स्टडी ऑफ इफैक्ट ऑफ पैरन्टल इनरोलमेंट एंड सस्पेंशन ऑन ऐकेडमिक एचीवमेंट ऑफ +2 स्टूडेंट्स, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़।
8. सिंह अरूण कुमार, (2009) शिक्षा मनोविज्ञान, भारती भवन, पी, एण्ड डी, पटना
9. श्री विद्या प्रतिमा, सी,एस, (2006) रोल ऑफ पेरेन्ट्स इन हेल्पिंग एडोलोसेंट्स विद् स्ट्रेस एक्सपेरिमेंट इन एजुकेशन, 40 (4) : 08
10. हरलॉक, ई,वी, (1979) डेवलपमेंटल साइकॉलजी, टी. एम.एच. पब्लिकेशन, नयी दिल्ली।